श्री कालभैरवाष्टकं

देवराजसेव्यमानपावनांघ्रि पंकजं
व्यालयज्ञसूत्रमिंदुशेखरं कृपाकरम् ।
नारदादियोगिवृंदवंदितं दिगंबरं
काशिकापुराधिनाथ कालभैरवं भजे ॥ 1

भानुकोटिभास्वरं भवाब्धितारकं परं
नीलकंठ मीप्सितार्थ दायकं त्रिलोचनम् ।
कालकालमंबुजाक्षमक्षशूल मक्षरं
काशिकापुराधिनाथ कालभैरवं भजे ॥ 2

शूलटंकपाशदंडपाणिमादिकारणं
श्यामकायमादिदेवमक्षरं निरामयम् ।
भीमविक्रमं प्रभुं विचित्र तांडव प्रियं
काशिकापुराधिनाथ कालभैरवं भजे ॥ 3

भुक्तिमुक्तिदायकं प्रशस्तचारुविग्रहं
भक्तवत्सलं स्थिरं समस्तलोक विग्रहम् ।
निक्वणन्मनोज्ञहेमकिंकिणीलसत्कटिं
काशिकापुराधिनाथ कालभैरवं भजे ॥ 4

© 2022 Vēdam Nadam

धर्मसेतुपालकं त्वधर्ममार्गनाशकं
कर्मपाशमोचकं सुशर्मदायकं विभुम् ।
स्वर्णवर्ण केशपाश शोभितांग निर्मलं
काशिकापुराधिनाथ कालभैरवं भजे ॥ 5

रत्न पादुका प्रभाभिराम पादयुग्मकं
नित्यमद्वितीय मिष्टदैवतं निरंजनम् ।
मृत्युदर्पनाशनं कराळदंष्ट्र भूषणं
काशिकापुराधिनाथ कालभैरवं भजे ॥ 6

अट्टहास भिन्न पद्मजांड कोश संततिं
दृष्टिपातनष्ट पापजाल मुग्र शासनम् ।
अष्टसिद्धि दायकं कपालमालिकाधरं
काशिकापुराधिनाथ कालभैरवं भजे ॥ 7

भूतसंघ नायकं विशालकीर्तिदायकं
काशिवासिलोक पुण्यपाप शोधकं विभुम् ।
नीतिमार्गकोविदं पुरातनं जगत्पतिं
काशिकापुराधिनाथ कालभैरवं भजे ॥ 8

© 2022 Vēdam Nadam

कालभैरवाष्टकं पठंति ये मनोहरं
ज्ञानमुक्ति साधकं विचित्र पुण्यवर्धनम् ।
शोकमोहलोभदैन्यकोपताप नाशनं
ते प्रयान्ति कालभैरवांघ्रिसन्निधिं ध्रुवम् ॥ 9

॥ इति श्रीमच्छंकरभगवतः कृतौ श्री कालभैरवाष्टकं संपूर्णम् ॥

© 2022 Vēdam Nadam